ओम नमःशिवाय.....ओमशांति प्रातःक्लास 24–4–67
भक्ति मार्ग के और जो भी सतसंग होते हैं उनमें तो सब गये होंगे। या तो कहेंगे बोल सत वाहेगुरू या .....नाम बतावेंगे। यहां बाप को बच्चों को कुछ कहने की दरकार नहीं रहती है। एक ही बार कह दिया। बार2 कहने की जरूरत नहीं है। बाप भी एक ही है। उनका कहना भी एक ही है। क्या कहते हैं?मामेकम् याद करो। एक बार सुना। बस। नया तो कोई यहां आ नहीं सकते। पहले सीखकर फिर....यहां बैठते हैं। हम जब बाप के बच्चे है। तो उनको याद करना है। यह भी तुमने अभी जाना है .....द्वारा कि हम सभी आत्माओं का बाप एक ही है। दुनियां तो नहीं जानती तुम जानते हो हम उस बाप के बच्चे हैं। उनको सभी गॉड फादर भी कहते हैं। अब फादर कहते हैं मैं इस साधारण तन (में) तुमको पढ़ाने आता हूँ। अभी तुम जानते हो बाबा इनमें आये हैं। हम उनके बने हैं। बाबा ही आकर पतित से पावन होने का रास्ता बताते हैं। यह सारा दिन बुद्धि में रहता है। ...शिवबाबा की सन्तान सब हैं ;परंतु तुम जानते हो और जानते नहीं हैं। तुम बच्चे उठते–बैठते जानते हो हम आत्मा हैं। (हमको) बाप ने फरमान किया है कि हमको याद करो। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। सब चिल्लाते रहते हैं कि हे पतित–पावन आओ। हम पतित बने हैं। यह देह नहीं कहती। आत्मा इस शरीर द्वारा कहती (है)। 84 जन्म भी आत्मा लेती है ना। शरीर तो पार्ट बजाकर चला जाता है। हम आत्मा एक शरीर छोड़कर (दूसरा) लेती हूँ। अभी हमने यह अंतिम 84वां जन्म लिया है। अभी बाप ने आत्मा को याद दिलाया है कि (तुमने) 84जन्म लिये हैं। पार्ट बजाया है ना। यह बुद्धि में रखना है कि हम एक्टर्स हैं। बाबा ने अब हमको त्रिकालदर्शी बनाया है। आदि,मध्य,अंत का ज्ञान दिया है। बाप को ही सब बुलाते हैं ना। अभी वो कलियुगी कहते रहते हैं कि भगवान आओ और तुम संगमयुगी ब्राह्मण कहते हो कि बाबा आया हुआ (है)। इस संगमयुग को तुम्हीं जानते हो। यह पुरुषोत्तम युग गाया जाता है। पुरुषोत्तम युग होता ही है कलियुग का अंत और सतयुग की आदि के बीच में। सतयुग में सत्य पुरुष ,कलियुग में झूठे पुरुष रहते हैं। सतयुग है ही सच्चखंड। सतयुग में जो होकर गये हैं उनके यहां चित्र हैं। सबसे पुराने ते पुराना यह (चित्र) है। इनसे पुराना चित्र कोई होता नहीं। जो होकर गये हैं उनके चित्र हैं। ऐसे तो बहुत मनुष्य .. ..चित्र भी बैठ बनाते हैं। जैसे हनुमान, गणेश आदि कोई होकर थोड़े ही गये हैं। यह सब भक्तिमार्ग में मनगढ़न्त चित्र बैठ बनाये हैं। यह तुम जानते हो कौन2 होकर गये हैं। जैसे नीचे अम्बा का(चित्र) बनाया है अथवा काली का चित्र है। तो ऐसी भुजाओं वाली थोड़े ही हो सकती है। अम्बा को भी भुजायें होंगी ना। मनुष्य तो जाकर हाथ जोड़ते हैं। पूजा करते हैं। भक्तिमार्ग में अनेक प्रकार के चित्र (बनाये) हैं। अकासुर–बकासुर की भयंकर शक्ल दिखाते हैं। ऐसे कोई मनुष्य हैं थोड़े ही। पुलिस के सिपाही लड़ाई आदि में ड्रेस ऐसी पहनते हैं जो भयंकर रूप बन जाता है। हैं तो मनुष्य ही ना। मनुष्य के ..... पर ही भिन्न प्रकार के सजावटें करते हैं। तो रूप बदली हो जाता है। तो यह चित्र आदि वास्तव (में) कोई है नहीं। यह सब है भक्तिमार्ग। मनुष्य तो मनुष्य ही है। जनावर–जनावर की ही सन्तान होते हैं। यहां मनुष्य कोई कैसे लूले–लंगड़े निकल पड़ते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं होता। सतयुग को (भी) जानते हो। आदि सनातन देवी देवता धर्म था। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी थे। यहां ड्रेस देखो हर एक (की) ....कैसे2 है। वहां तो यथा राजा–रानी तथा प्रजा होते हैं। जितना नजदीक होते जावेंगे तो(तुमको अपनी) राजधानी की ड्रेस आदि का भी सा. होता रहेगा। देखते रहोगे हम ऐसे स्कूल में.....यह करते हैं। देखेंगे भी वो जिनका बुद्धियोग अच्छा होगा। अपने शांतिधाम और सुखधाम (को याद) करते हैं। धंधा–धोरी तो करना ही है। भक्ति में भी धंधा–धोरी को तो करते हैं ना। फिर .....को याद करते रहते हैं। जैसे मीरा है कितना याद करती थी। कृष्ण की पुजारिन थी। ध्यान (में जाती) थी। ज्ञान कुछ भी नहीं था। यह सब हैं भक्ति। उनको कहेंगे भक्ति का ज्ञान। वो यह (समझ)

नहीं सकते कि तुम विश्व का मालिक बनोगे। तुम जानते हो कि यह पढ़ाई है नई दुनियां अमरलोक के लिए। बाकी कोई अमरनाथ पर शंकर ने पार्वती को कथा नहीं सुनाई है। वो तो शिव शंकर को मिला दिया है। आजकल तो मनुष्य अपने पर भी नाम रखवा लेते हैं। शिव शंकर राधा कृष्ण। अब बाप सब बातें तुम बच्चों को समझा रहे हैं। यह भी सुनते हैं। बाप बिगर सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज कोई बता नहीं सकते हैं। यह कोई साधु–संत आदि नहीं हैं। जैसे तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते थे वैसे ही यह भी था। ड्रेस आदि सब वो ही है। जैसे घर में मां–बाप बच्चे आदि होते हैं। फर्क कुछ नहीं। बाप इस रथ पर सवार होकर आते हैं बच्चों के पास। यह भाग्यशाली रथ गाया जाता है। कब बैल पर सवारी दिखाते हैं। मनुष्यों ने उल्टा समझ लिया है। मंदिर में कब बैल हो सकता है क्या?कृष्ण तो है ही शरीरधारी। वो थोड़े ही बैल पर बैठेंगे। कितना (रोला) है भक्तिमार्ग में। मनुष्य बहुत मूंझे हुये हैं। कुछ नहीं समझते ;परंतु अहंकार कितना है। कितने टाइटल्स मिले हुये हैं। बाप को ही नहीं जाना तो कोई काम के नहीं रहे। उनको भक्तिमार्ग का ही नशा है। तुमको है ज्ञानमार्ग का नशा। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं इस संगम पर। तुम हो तो इसी दुनियां में ;परंतु बुद्धि से जानते हो कि हम ब्राह्मण संगमयुग पर हैं। बाकी सब मनुष्य कलियुग में हैं। यह अनुभव की बातें हैं। बुद्धि कहती है हम कलियुग से अब निकल आये हैं। बाबा आया हुआ है। यह पुरानी दुनियां ही बदलने वाली है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई नहीं जानते। भल एक ही घर में रहने वाले हैं, एक ही भारत में हैं। इसमें ही बाप कहेंगे हम संगमयुग पर हैं। .....वंडर है ना। यह संगमयुग बहुत छोटा है। इनको 60/70वर्ष मिले हुये हैं जब तक कि विनाश हो। बच्चे जानते हैं कि हमारी पढ़ाई पूरी (होगी) तो विनाश होना जरूर है। तुम्हारे में भी कोई थोड़े ही जानते हैं। अगर जानते हैं कि विनाश होने वाला है तो अपनी तैयारी करने में लग जावें। बैग बैगेज तैयार कर लेवें। बाकी थोड़ा समय है.....। भूख मरेंगे तो भी पहले बाबा फिर बच्चे। यह तो शिवबाबा का भंडारा है। तुम शिवबाबा के भंडारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं। इसलिए ही ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। ....पवित्र ब्राह्ण हैं। याद में रहकर बनाते हैं। सिवाय ब्राह्मणों के शिवबाबा की याद में कोई रह नहीं सकते हैं। वो ब्राह्मण थोड़े ही शिवबाबा की याद में रहते हैं। शिवबाबा का भंडारा यह है जहां ब्राह्मण भोजन बनाते हैं। ब्राह्मण योग में रहते हैं। पवित्र तो हैं ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। (गपोड़ा) चल नहीं सकता। ऐसे कोई कह नहीं सकते कि मैं स्मरण योग में हूँ वा 50% योग में हूँ। कोई भी कह नहीं सकते। ज्ञान भी चाहिए। योगी किसी को भी देखेगा तो अपनी ताकत से ही.....कोई को भी शांत कर देगा। सन्नाटा हो जावेगां जैसे तुम यहां याद में बैठते हो। यहां खास प्रैक्टिस कराई जाती है। फिर भी कोई सब याद में रहते नहीं हैं। कहां2 बुद्धि भागती रहती है। तो वो फिर नुकसान कर लेते हैं। यहां बिठाना उनको चाहिए जो समझे कि मैं ड्रिल टीचर हूँ। बाप की याद में (सामने) बैठे हैं। बुद्धि का योग और कोई तरफ नहीं जावे। सन्नाटा हो जावेगा। तुम अशरीरी बन जाते हो। .....फिर बाप की याद में रहते हो। यह है सच्ची याद। सन्यासी भी शांति में बैठते हैं। .....वो कोई रीयल याद नहीं। कोई को फायदा नहीं दे सकते हैं। वो सृष्टि को शांत (नहीं कर) सकते। बाप को जानते ही नहीं हैं। ब्रह्म को ही भगवान समझते रहते हैं। वो तो है नहीं। तुमको श्रीमत मिलती है कि मामेकम् याद करो। तुम जानते हो हम 84जन्म पापात्मा बनते आये हो। धीरे2 कला कम होती जाती है। जैसे चंद्रमा की कला कम होती जाती है। देखने से इतना मालूम .....होता है। अभी कोई भी सम्पूर्ण नहीं बना है। ना कोई जल्दी बन सकते हैं। टाइम पड़ा है। .....तुमको सब सा. होगा। आत्मा कितनी छोटी है उनका भी सा. हो सकता है। नहीं तो

बच्चियां (कैसे) बतावें कि इनमें लाइट कम है, इनमे जास्ती है। कितनी छोटी आत्मा है। यह भी बाबा सा. कराते हैं। दिव्य दृष्टि से ही आत्मा को देखते हैं। यह भी सब ड्रामा में नूंध है। मेरे हाथ में कुछ नहीं है। .....यह सभी ड्राम अनुसार चलता रहता है। भागना आदि सभी ड्रामा में नूंध थी। .....अभी बाप शिक्षा देते हैं कि पावन कैसे बनना है। बाप को याद करना है। कितनी छोटी आत्मा है जो पतित बन फिर पावन बनती है। वंडरफुल बात है ना। कुदरत कहते हैं ना। बाप से तुम सब कुदरती बातें सुनते हो। सबसे कुदरती बात है आत्मा और परमात्मा की। हम इतनी छोटी आत्मा हैं। उसमें ही इतना पार्ट नूंधा हुआ है। आत्मा तो अविनाशी है ना। दुनियां में यह बातें कोई नहीं जानते जो बाप समझाते हैं। ऋषि–मुनि आदि कोई भी नहीं जानते। पत्थरबुद्धि हैं ना। इतनी छोटी आत्मा ही पत्थरबुद्धि से फिर पारस बुद्धि बनती है। पत्थर बुद्धि से फिर पारस बुद्धि पारसनाथ.....बनाते हैं यह अभी तुम समझते हो। हम आत्मा पारस बुद्धि थे। अभी हमारी पत्थर बुद्धि हो गई है। कितनी छोटी आत्मा है। इन बातों का बुद्धि में स्मरण करना चाहिए। आत्मा कैसे 84जन्मों का चक्र लगाती है। कितनी आत्माएं हैं?वो होते हैं हद के एक्टर्स, वो होते हैं बेहद के। इन ज्ञान की बातों को और कोई भी समझ नहीं सकते हैं। तुम बच्चे ही समझ रहे हो। बुद्धि में यही चिंतन चलता रहता है हम आत्मा पत्थरबुद्धि से फिर .....पारस बुद्धि बन रहे हैं। यह भूलना नहीं चाहिए। आत्मा को .....पहचान मिली है। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। ....कितनी महीन बातें हैं। समझाने में भी मेहनत लगती है। दो बाप का भी समझाना है। तुम आत्मा बाप को याद करते हो ना। तुम ...आत्मा हो तो तुम्हारा बाप कौन है?..... .....आत्मा.....बिंदी है जो 84 का चक्र लगाती है। आत्मा विनाश नहीं होती है। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर तुमको यह ज्ञान देता हूँ। (फिर) तुम भूल जाते हो। फिर आकर तुमको यह गुह्य प्वाइंट्स सुनाता हूँ। यह कोई शास्त्रों में नहीं लिखी हुई है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है मैं आत्मा बिंदी हूँ। बाबा भी बिंदी है। लौकिक रीति से तो बाप भी बड़ा ,टीचर, गुरू भी बड़े मिलते हैं। यह तो एक ही .....बाप भी है, तो टीचर भी है, तो गुरू भी है। सारा कल्प देहधारी को याद किया है। अब बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। तुम्हारी बुद्धि को कितना महीन बनाता हूँ। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात थोड़े ही है। यह भी कोई खयाल नहीं करते कि यह ल.ना. विश्व के मालिक कैसे बने?यही विश्व के मालिक थे। और कोई नहीं था। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। नया कोई इन बातों को समझ नहीं सकता। पहले2 मोटे रूप में समझाकर फिर महीनता से समझाया जाता है। बाप है बिंदी। वो फिर इतना बड़ा लिंगरूप रख देते हैं। मनुष्यों के भी बहुत बड़े2 चित्र बनाते हैं ;परंतु ऐसा है नहीं। भक्तिमार्ग में क्या2 बैठ बनाते हैं। मनुष्य कितना मूंझे हुये हैं। (बाप कहते) हैं जो पास्ट हो गया वो ही फिर होगा। अभी तुम बाप की श्रीमत पर चलो। .....तुमको हम बादशाही देता हूँ। अब इस सर्विस में लग जाना है। .....यह सब छोड़ दो। यह भी निमित्त बना। सभी तो ऐसा निमित्त नहीं बनते .....। .....नशा चढ़ी तो आकर बैठ गये। हमको तो राजाई मिलती है। फिर पाई पैसे का क्या.....बाप बच्चों से पुरुषार्थ कराते हैं। जानते हो राजधानी स्थापन हो रही है। कहते भी हैं कितनी बड़ी प्रारब्ध.....। तो श्रीमत पर चलकर दिखाओ। कुछ भी चूं–चां मत करो। ....एक्सीडेंट में अचानक कोई मर जाता तो कोई भूख मरता। .....तो डरना ना चाहिए। अच्छा, बच्चों को विदाई।